भारत–अमेरिका ऐतिहासिक सम्बन्ध

*डॉ. ममता शर्मा

सारांश

भारत व अमेरिका दुनिया के दो बड़े एवं महत्त्वपूर्ण प्रजातांत्रिक देश हैं। भारत व अमेरिका में कभी गहरे सम्बन्ध 1947 से पहले देखने को नहीं मिले। भारत–अमेरिका सम्बन्धों में सर्वप्रथम कश्मीर की समस्या ने तनाव पैदा किया। 1950–51 में भारत में एक भयंकर अकाल पड़ा जिससे भारत के समक्ष भारी खाद्यान्न संकट उपस्थित हुआ। इस बार संयुक्त राज्य अमेरिका का उत्तर आशानुकूल तथा भारतीय आवश्यकताओं के प्रति सकारात्मक रहा। कालान्तर में भारत के विरोध के बावजूद अमेरिका ने पाकिस्तान को बड़े पैमाने पर अस्त्र–शस्त्र देने का निर्णय किया जिनका प्रयोग भारत के विरूद्ध ही हुआ। परिणामतः भारत–अमेरिका सम्बन्धों में लम्बे समय तक खटास रहा। धीरे–धीरे समय बदला, अब इक्कीसवीं सदी में गुजरते समय के साथ भारत–अमेरिका सम्बन्ध निरन्तर प्रगाढ़ हो रहे है।

मुख्य शब्दः भारत, अमेरिका, सम्बन्ध, ऐतिहासिक, गुटनिरपेक्षता, साझीदार।

प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता से पहले भारत व अमेरिका के आपसी सम्बन्ध नाम मात्र या ना के बराबर थे। भौगोलिक रूप से आपसी दूरी व भारत ब्रिटेन का उपनिवेश होने के कारण ब्रिटिश शासन की नीति ही सर्वेसर्वा होती थी, अमेरिका स्वयं भी पार्थक्यवादी नीति का अनुसरण करने वाला देश है। जिसके कारण भारत व अमेरिका में कभी गहरे सम्बन्ध 1947 से पहले देखने को नहीं मिले परन्तु अमेरिका में निवास करने वाले भारतियों के सहयोग से तथा 1929 में भारत की ओर से सरोजिनी नायडू की अमेरिका यात्रा से अमेरिकन व्यक्तियों की भारतीय समस्याओं के प्रति रूचि उत्पन्न हुई परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के समय से भारत और अमेरिका एक दूसरे के वास्तविक तौर पर सम्पर्क में आए।

भारत व अमेरिका दुनिया के दो बड़े एवं महत्त्वपूर्ण प्रजातांत्रिक देश हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की एक सर्वप्रचलित मान्यता यह है कि इसमें कोई भी देश स्थायी मित्र अथवा स्थायी शत्रु नहीं होता है, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रों के राष्ट्रीय हित ही सर्वोपरि होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यथार्थवाद का सिद्धान्त इसी विचार पर आधारित है यह विचार भारत व अमेरिका के समकालीन सम्बन्धों पर स्टीक उतरता है द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक नवोदित राष्ट्र के रूप में भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया। यह नीति ही भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल मानी गई थी, क्योंकि भारत को अपनी सुरक्षा के साथ–साथ अपने आर्थिक व सामाजिक विकास को भी सुनिश्चित करना था।

भारत की गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति व अमेरिकी दृष्टिकोण

15 अगस्त, 1947 को स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् भारत को अपनी विदेश नीति के निर्धारण का पूर्ण स्वतंत्र अवसर प्राप्त हुआ। भारत के सामने समस्या थी कि वह या तो विश्व के दो परस्पर विरोधी खेमों में से किसी एक में अपने

को समर्पित करें या किसी स्वतंत्र नीति का अवलम्बन करें। काफी विचार–विमर्श के पश्चात् भारत सरकार तथा राष्ट्रीय नेताओं ने राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारणों से विश्व समस्याओं पर गुटों से अलग रहने की सकारात्मक, गतिशील एवं स्वतंत्र विदेश नीति का अवलम्बन किया।

गुटनिरपेक्षता तटस्थता नहीं

संयुक्त राज्य प्रशासन ने इस तथ्य की उपेक्षा की कि भारत अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकता है। उसने असंलग्नता की विदेश नीति का 'तटस्थतावाद' जिसे वे सोवियत संघ का समर्थन समझते थे, के रूप में व्याख्या करने की हठ की। यह अनदेखा करते हुए कि असंलग्नता तटस्थता नहीं है, जैसा कि पण्डित नेहरू ने इसे परिभाषित करते हुए कहा –

''जब हम कहते हैं कि हमारी नीति असंलग्नता की नीति है, स्पष्टतया हमारा अभिप्राय सैन्य गुटों से असंलग्नता की नीति है। यह एक नकारात्मक नीति नहीं है। मैं आशा करता हूँ कि यह एक सकारात्मक, निश्चित और गतिशील नीति है, लेकिन हम आज सैनिक गुटों तथा शीत युद्ध में किसी भी गुट में अपने को संलग्न नहीं करते। यह स्वयं में एक नीति नहीं, नीति का एक भाग है।... यह नीति स्वयं में हमारे सद्निर्णय, आगे के प्रमुख उद्देश्यों तथा विचारों को जो हम रखते हैं, को कार्य रूप में परिणित करने की नीति है।''

कश्मीर समस्या : भारत–अमेरिका सम्बन्धों में सर्वप्रथम तनाव

भारत–अमेरिका सम्बन्धों में सर्वप्रथम कश्मीर की समस्या ने तनाव पैदा किया। संयुक्त राष्ट्र संघ में माउण्टबेटन तथा ब्रिटिश तथा अमेरिकी प्रतिनिधियों के प्रभाव के कारण ही भारत ने कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में पेश करने का निर्णय किया था तथापि संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीर पर बहस के दौरान अमेरिकी तथा अन्य देशों के विचार पाकिस्तान के ही पक्ष में रहे। वास्तव में इस समय तक अमेरिका ने यह सोचना शुरू कर दिया कि शायद पाकिस्तान अमेरिका की सुरक्षा संधियों को स्वीकार कर लेगा। ऐसा इसलिए सोचा गया क्योंकि नेहरू की यात्रा के तुरंत बाद ही पाकिस्तानी प्रधानमंत्री लियाकत अली खान की अमेरिकी यात्रा को अत्यधिक महत्त्व दिया गया था। कश्मीर पर भारत के दृष्टिकोण को समझने में अमेरिका की कमी ने दोनों देशों के बीच एक बड़ी खाई पैदा कर दी।

इस प्रकार 1947 से 1961 के काल में कश्मीर समस्या के प्रति अमेरिकी दृष्टिकोण पाकिस्तानी रूख का समर्थन करना था। दूसरे शब्दों में, अमेरिकी दृष्टिकोण अनेक गलत अवधारणाओं पर आधारित असंगतियों से पूर्ण पाकिस्तानी दावे के प्रति सकारात्मक रहा।

पूर्वी एशिया

पूर्वी एशिया से सम्बन्धित उनकी अनेक घटनाओं को लेकर भी भारत और अमेरिका में घोर मतभेद रहा। ये घटनाऐं थी – चीन में साम्यवादी राज्य की स्थापना और उसकी मान्यता का प्रश्न, जापान के साथ संधि का प्रश्न, कोरिया का युद्ध तथा हिन्द चीन का प्रश्न।

भारत द्वारा साम्यवादी चीन का पूर्ण समर्थन

1949 ईस्वी में जब चीन माओ के नेतृत्व में एक साम्यवादी देश के रूप में उभरकर सामने आया तो भारत ने चीन के लिए अपने सम्बन्धों के महत्त्व को समझते हुए दिसम्बर, 1949 में इसको पूर्ण मान्यता देने का निश्चय किया। भारत के इस निर्णय पर अमेरिका ने अप्रसन्नता तथा कड़ा विरोध प्रकट किया क्योंकि वह समझता था कि ऐसा

निर्णय साम्यवाद के नियंत्रण की अमेरिका की नीति के विरूद्ध था। अमेरिका ने यह महसूस किया कि भारत का यह निर्णय अमेरिका के विरूद्ध रूस की सहायता करेगा तथा इस प्रकार विश्व के विभिन्न भागों में साम्यवाद के बढ़ते प्रभाव को और अधिक बल देगा।

कोरियाई संकट : भारत और अमेरिका के दृष्टिकोण

भारत–अमेरिकी सम्बन्धों को कोरियन युद्ध (1950) ने एक नया आयाम प्रदान किया। 25 जून, 1950 को उत्तरी कोरिया ने दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् ने उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी घोषित किया, युद्ध रोकने के लिए कहा और उत्तरी कोरिया से यह कहा गया कि वह अपनी सेनाओं को 38व समानान्तर से ऊपर की ओर ले जाए। भारत ने सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव का समर्थन किया और उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी माना लेकिन उसी समय भारत ने अमेरिका के उस प्रस्ताव का विरोध भी किया, जिसमें बलपूर्वक उत्तरी कोरिया की सीमा को पार करने की बात थी। आगे चलकर दोनों देश कोरियाई युद्ध के मुद्दे पर विपरीत विचार रखने लगे और इन देशों के द्विपक्षीय संबंधों में तनाव का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण रहा।

1951 का अकाल (भारत में खाद्यान्न संकट) और संयुक्त राज्य अमेरिका

1950–51 में भारत में एक भयंकर अकाल पड़ा जिससे भारत के समक्ष भारी खाद्यान्न संकट उपस्थित हुआ। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने अधिकारिक रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका से ऋण की माँग की। इस बार संयुक्त राज्य अमेरिका का उत्तर आशानुकूल तथा भारतीय आवश्यकताओं के प्रति सकारात्मक रहा। संयुक्त राज्य अमेरिका प्रशासन ने 20 मिलियन (बीस लाख टन) गेहूँ खरीदने के लिए 189.7 मिलियन डॉलर का ऋण भारत को प्रदान किया। इस प्रकार भारत की खाद्यान्न आपूर्ति की आवश्यकता में संयुक्त राज्य अमेरिका का महान योगदान रहा है। लेकिन उसे भारत को खाद्यान्न सहायता की आवश्यकता का सत्य बोध 1951 के आपातकालीन खाद्यान्न सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत हुआ।

अमेरिका–पाकिस्तान पारस्परिक प्रतिरक्षा सहायक समझौता (1954)

मई, 1954 में पाकिस्तान और अमेरिका के मध्य में पारस्परिक प्रतिरक्षा सहायक समझौता किया गया, जिसके अंतर्गत यह पूर्णतः स्पष्ट हो गया कि अमेरिका पाकिस्तान को दक्षिण एशियाई महाद्वीप के सभी मुद्दों पर समर्थन करता रहेगा। इस समझौते के अंतर्गत अमेरिका के द्वारा पाकिस्तान को सैनिक सहायता दिए जाने का प्रावधान था। भारत और पाकिस्तान के मध्य चलते तनावपूर्ण संबंध को ध्यान में रखते हुए भारत के द्वारा इसका विरोध किया जाना स्वाभाविक था। तब नेहरू जी ने कहा था कि संवैधानिक दृष्टि से अथवा अन्य किसी दृष्टिकोण से पाकिस्तान – अमेरिका सम्बन्धों में क्या गतिविधियाँ चलती हैं, भारत इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता, किंतु अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को शस्त्राशस्त्र देने से भारत की सुरक्षा को प्रत्यक्ष रूप से चुनौती का सामना करना पड़ेगा क्योंकि जब भी पाकिस्तान को विदेशों से हथियार प्राप्त हुए उनका प्रयोग भारत के विरूद्ध ही किया जाएगा इसलिए नई दिल्ली ने अपनी गहरी चिन्ता को व्यक्त किया। अमेरिका एवं पाकिस्तान के मध्य हुए इस समझौते से भारत एवं अमेरिका के सम्बन्धों में कटुता आने लगी थी क्योंकि भारत के विरोध के बावजूद अमेरिका ने पाकिस्तान को बड़े पैमाने पर अस्त्र–शस्त्र देने का निर्णय किया।

भारत व अमेरिका के बीच पी.एल. 480 समझौता

मई 1960 में भारत तथा अमेरिका के बीच पी.एल. 480 समझौता हुआ जिसके अंतर्गत अमेरिका ने रूपये के बदले तथा कम कीमत पर भारत को अनाज देना स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त यह भी स्वीकार किया गया कि पी.एल.

480 कोष को भारतीय रिजर्व बैंक में जमा करवाया जायेगा। भारत ने अमेरिका से न केवल अनाज प्राप्त करना शुरू किया बलिक भारतीय कृषि के विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देने तथा भारत में कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना के लिए अमेरिका से बहुमूल्य सहायता प्राप्त करना शुरू कर दिया। इस समय के दौरान अमेरिका ने कुछ बहुमुखी योजनाओं तथा स्वास्थ्य योजनाओं को पूरा करने के लिए भी सहायता एवं सहयोग प्रदान किया।

भारत चीन युद्ध 1962 और संयुक्त राज्य प्रशासन

20 अक्टूबर, 1962 को भारतीय उपमहाद्वीप पर साम्यवादी चीन के आक्रमण से राष्ट्रपति कैनेडी तथा उनके सहयोगियों को तीव्र चिन्ता हुई क्योंकि प्रश्न यह था कि चीन ने भारत पर क्यों आक्रमण किया? इसका कारण यह था कि मुक्तिकरण के पश्चात् चीनी विदेश नीति के समक्ष दो लक्ष्य थे एक तो साम्यवादी शासन को सुदृढ़ तथा स्थायी बनाना और दूसरे दक्षिणी पूर्वी एशिया में अपने प्रभाव क्षेत्र का निर्माण करना। एशिया में चीन के अतिरिक्त दूसरी प्रभावशाली शक्ति भारत की ही थी, बिना भारत को झटका दिए वह अपने प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि नहीं कर सकता था। इसके लिए उसने एक ओर जहाँ भारत से मित्रता की बात कही, वहीं दूसरी ओर तिब्बत में अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार के साथ ही साथ भारत पर आक्रमण कर दक्षिणी पूर्वी एशिया में अपनी धाक जमाने की चेष्टा की। यह भारत के लिये तो एक चुनौती साबित हुई, साथ ही साथ अमेरिका के लिये अहितकारी थी, क्योंकि अमेरिका भारत को साम्यवादी व्यवस्था के प्रतिकूल 'स्वतंत्र विश्व' का एक भाग समझता था।

संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी प्रतिनिधि स्टीबेन्सन ने महासभा में बोलते हुए भारत पर चीन के 'नग्न आक्रमण' की निन्दा की। उनकी दृष्टि में साम्यवादी चीन का भारत पर आक्रमण संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्ता के प्रति उसकी अयोग्यता का घोतक था।

भारत–पाकिस्तान युद्ध, 1965

चीन द्वारा 1962 में भारत की अपमानजनक पराजय ने पाकिस्तान को यह विश्वास दिला दिया कि भारत को पराजित करके पूर्ण जम्मू कश्मीर राज्य पर अपना अधिकार कर सकता था। सितम्बर 1965 में पाकिस्तान ने युद्ध में अमेरिकी हथियारों का प्रयोग किया, यद्यपि भारत को विश्वास दिलवाया गया था कि उन अस्त्रों का प्रयोग भारत के विरूद्ध नहीं किया जाएगा। भारत ने अमेरिका का ध्यान पाकिस्तान द्वारा अमरिकी शस्त्राशस्त्रों के युद्ध में प्रयोग की ओर दिलाते हुए, इस पर आपत्ति की। परन्तु अमरिकी प्रशासन ने 'इस आपत्ति की अवहेलना करते हुए अपने अपने पाकिस्तान समर्थक आचरण' में कोई परिवर्तन नहीं किया। अमरिका की इस नीति ने भारत अमेरिकी संबंधों में पुनः तनाव उत्पन्न कर दिया।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की अमेरिका यात्रा (28 मार्च, 1966)

28 मार्च, सन् 1966 को श्रीमती इन्दिरा गांधी की अमेरिकी यात्रा प्रारंभ हुई। वैसे तो श्रीमती इन्दिरा गांधी पहले कई बार अमेरिका की यात्रा कर चुकी थी, लेकिन प्रधानमंत्री के रूप में यह उनकी प्रथम यात्रा थी। उस समय भारत भीषण आर्थिक संकट से गुजर रहा था और यही उम्मीद की गई कि प्रधानमंत्री की यात्रा से प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहायता मिल सकती है, लेकिन सब मिलाकर यह कहा जा कसता है कि कोई विशेष परिणाम नहीं मिला।

निक्सन युग और भारत–अमेरिका सम्बन्ध (1969–1974)

20 जनवरी, 1969 को रिचर्ड निक्सन संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बने। उनके कार्यकाल में भारत–अमेरिका सम्बन्धों में जितनी कटुता आयी उतनी पहले कभी नहीं रही क्योंकि राष्ट्रपति निक्सन का का दृष्टिकाण भारत विरोधी था।

भारत–सोवियम संघ मैत्री संधि (1971)

1948, 1962 तथा 1965 के अनुभवों ने यह सिद्ध कर दिया था कि भारत अपने ज्वलंत राष्ट्रीय हितों के ऊपर प्रभाव डालने वाले मामले पर मात्र संयुक्त राज्य के प्रस्तावों एवं सहायता पर निर्भर नहीं कर सकता था। उसके लिए यह अनिवार्य हो गया था कि हितों एवं पारस्परिकता के कारण आवश्यकता के समय वह सोवियत संघ पर निर्भर करें। अतः 9 अगस्त, 1971 को दोनों देशों के विदेश मंत्रियों ए.ए. ग्रेमिको तथा स्वर्ण सिंह के मध्य नई दिल्ली में शांति, मित्रता और सहयोग की बीस वर्षीय संधि पर भारत एवं संयुक्त सोवियत समाजवादी गणराज्य के हस्ताक्षर हुए। कहा जा सकता है कि भाात–सोवियत संधि भावुक आधारों पर नहीं वरन् भारत तथा उसके चारों ओर घटित होने वाले कठिन तथ्यों की परिस्थितियों का परिणाम थी।

भारत–अमेरिका सम्बन्ध निम्नतर स्तर तक गिर गए थे। हेनरी कीसिंगर ने अपनी पुस्तक व्हाईट हाऊस इयर्स (White House Years) में लिखा कि ''1971 तक भारत के साथ हमारे सम्बन्ध दोष एवं तनावयुक्त मैत्रीपूर्ण हो गए थे।''

अमेरिका की पाकिस्तान को खुलकर दी गई सहायता का भारत में तीव्र विरोध हुआ। भारत, सोवियत संघ के और भी निकट आ गया और अमेरिका भारत के विरूद्ध व्यवहार करके भी पाकिस्तान का विभाजन नहीं रोक सका। फिर भी, 1972 में हेनरी कीसिंगर ने कहा था कि दक्षिण एशिया में भारत का प्रभुत्व था।

सोवियत संघ के विघटन तथा शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत–अमेरिका सम्बन्ध

वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन तथा शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद भारत व अमेरिका के बीच तनाव का माहौल समाप्त हो गया लेकिन उत्तर शीतयुद्ध काल में चीन के सैनिक व आर्थिक उदय ने अमेरिका के लिए नई चुनौती पेश कर दी, वर्तमान में अमेरिका नीति निर्माताओं का यह दृढ़ विश्वास है कि आर्थिक व सैनिक दृष्टि से उभरता हुआ चीन विश्च मे अमेरिकी वर्चस्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया ही वे देश है, जो चीन को संतुलित कर सकते हैं, अपने आकार तथा भौगोलिक स्थिति के कारण भारत की इस संतुलन में केन्द्रीय भूमिका है। दूसरी तरफ, पाकिस्तान तथा दक्षिण एशिया में चीन के बढ़तें हुए प्रभाव, सीमा विवाद, पाकिस्तान–चीन सामरिक गठजोड़, दक्षिण–पूर्व एशिया में भारत–सामरिक प्रतियोगिता आदि के चलते भारत भी चीन के सैनिक उभार से चिन्तित है। अतः चीन को लेकर भारत व अमेरिका के सामरिक हितों में पर्याप्त मान्यता दिखाई देती है।

उत्तर शीत युद्ध काल मे भारत व अमेरिका सम्बन्ध

सामरिक स्थिति है जिसके चलते उत्तर–शीत युद्ध काल में भारत व अमेरिका के सामरिक सम्बन्धों का तेजी से विकास हुआ है। दोनों देशों के बीच सारिक साझेदारी निरन्तर मजबूत होती जा रही है। सामरिक हितों की अनुकूलता के साथ ही भारत व अमेरिका के बीच साझे मूल्यो की पृष्ठभूमि भी उपल्बध है। भारत विश्व का सबसे बड़ा क्रियाशील लोकतंत्र है तथा विधि का शासन जैसे साझा मूल्यो में विश्वास करते है। भारत व अमरिका के बीच सामरिक साझेदारी का सबसे बड़ा उदाहरण दोनों देशों के बीच 2008 का सिविल परमाणु सहयोग समझौता है, जो अमरिका के विशेष प्रयासों से ही सम्भव हो पाया है। इस समझौते का भारत के लिए विशेष महत्व है, क्योंकि इसके द्वारा 1974 से चला आ रहा भारत का परमाणु अलगाव समाप्त हो गया। भारत ने इस समझौते के आधार पर ही विभिन्न देशों के साथ सिविल परमाणु सहयोग की प्रक्रिया शुरू की है।

वर्तमान में भारत व अमेरिका सम्बन्ध

वर्तमान में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझीदार देश है तथा अमेरिका ही वर्तमान में भारत की रक्षा आपूर्ति का भी सबसे बड़ा स्रोत है। शीत युद्ध काल में यह दर्जा सोवियत संघ को प्राप्त था। दोनों देशों ने 'मालाबार' नामक संयुक्त नौसैनिक अभ्यास भी जारी कर रखा है। 2015 में दोनों देशों के एक–दूसरे के यहॉ सशस्त्र सेनाओं के रूकने की व्यवस्था भी कर ली है। अमेरिका ने भारत को बड़ा प्रतिरक्षा साझेदार देश घोषित कर दिया है। जनवरी 2015 में बराक ओबामा की भारत यात्रा के दौरान भारत व अमेरिका ने हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में साझा सामरिक विजन दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए थे तथा इस क्षेत्र में परस्पर सहयोग बढाने पर बल दिया। उधर दक्षिण एशिया मे भी अमरिका भारत की बढी भूमिका का समर्थक है।

निष्कर्ष

भारत की आजादी के आसपास से लेकर पूरी बीसवीं सदी तक भारत– अमेरिका सम्बन्ध अच्छे नहीं रहे। इसका मुख्य कारण अमेरिका का भारत की विदेश नीति के प्रति अविश्वास और पाकिस्तान के प्रति झुकाव रहा है। इक्कीसवीं सदी में गुजरते समय के साथ भारत–अमेरिका सम्बन्ध निरन्तर प्रगाढ़ हो रहे है।

***व्याख्याता**
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़ (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. पवन कुमार – 'भारत की विदेश नीति', ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006, पृ.203.
2. नार्मन डी. पामर – 'इण्डिया ऐज ए फैक्टर इन यू.एस. फॉरेन पॉलिसी' – इन्टरनेशनल स्टडीज, नई दिल्ली, जुलाई, 1964, जि. 6, सं.1, पृ.59.
3. ए. अप्पादुरई एण्ड एम.एस. राजन – ''इंडियाज फॉरेन पॉलिसी एण्ड रिलेशन्स'', साउथ एशियन पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली, 1988, पृ.215.
4. इंदिरा गांधी – 'इण्डिया एण्ड दि वर्ल्ड – फॉरेन अफेयर्स न्यूयॉर्क', अक्टूबर 1972, पृ.74.
5. जवाहर लाल नेहरू,– इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1961, पृ.79.
6. जवाहर लाल नेहरू,– इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1961, पृ.391.
7. जवाहर लाल नेहरू – इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, सलेक्टेड स्पीचेज, नई दिल्ली, 1961, पृ.418–419.
8. पी.जे. एलरिज – दि पॉलिटिक्स ऑफ फॉरेन एण्ड इन इंडिया, नई दिल्ली, 1969, पृ.42.
9. डेनिस कुक्स – इंडिया एण्ड दी यूनाइटेड स्टेट्सः ऐस्ट्रेन्जड डेमोक्रेसीज,1947–1991, वाशिंगटन डी.सी., 1992, टि. 9, पृ.791.
10. एम.एस. राजन – इण्डिया एण्ड दी इण्टरनेशनल अफेयर्स, लांसर बुक पब्शिर्स, नई दिल्ली, 1998, पृ.195.